फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 276 प्रभात जयपुर, रविवार 10 मई, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Too Many Tests And Too Tired Doctors!

Defensive medicine is a clinical practice where medical practitioners recommend diagnostic tests, procedures or consultations primarily to protect themselves from potential malpractice lawsuits

Banaras Vs Delhi Chaat

White Dragon Fruit Vs Red Dragon Fruit

क्या राजस्थान का इतिहास दोहराया जाएगा केरल में, इस बार?

विधानसभा में विपक्ष के नेता सतीशन की शिकायत है कि पाँच साल उन्होंने गाँव-गाँव जाकर मेहनत की तथा वेणुगोपाल ने दिल्ली में बैठकर संगठन महासचिव के पद का आनंद लिया और अब वेणुगोपाल केरल का मु.मंत्री बनने का दावा पेश कर रहे हैं

- वेणुगोपाल व सतीशन में कटुता इतनी बढ़ गई है कि वेणुगोपाल ने भी कमर कस ली, यह कहकर कि वे देखते हैं, सतीशन कैसे मु.मंत्री बनते हैं। हालांकि, सतीशन को भारी समर्थन मिल रहा है, कार्यकर्ताओं व पार्टी के नेताओं से।
- पहले राहुल का चुनाव क्षेत्र और अब प्रियंका गांधी की सीट वायनाड में भी जहाँ आईयूएमएल की काफी पकड़ है, में भी पूरा दबाव है, सतीशन को मु.मंत्री बनाने के लिए। आईयूएमएल के सतीशन से पुराने व गहरे संबंध हैं।
- राहुल गांधी की भी साढ़े चार घंटे की लंबी बातचीत हुई, केरल के मु.मंत्री पद के दावेदारों के साथ। पर, मु.मंत्री पद के दावेदारों की यह बैठक भी अनिर्णित ही रही है, अब तक।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। केरल कांग्रेस में जो कुछ हो रहा है, वह राजस्थान कांग्रेस में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद हुए घटनाक्रम की याद दिला रहा है।

सचिन पायलट ने पांच साल तक गाँव-गाँव घूमकर, धूप और धूल झेलकर, कड़ी मेहनत की, लेकिन जब मुख्यमंत्री पद का समय आया, तो अशोक गहलोत को चुना गया, जो उस समय संगठन के प्रभारी एआईसीसी महासचिव थे। गहलोत को बड़े मारवाड़ी कारोबारियों और धनशक्ति के प्रदर्शन के कारण मुख्यमंत्री बनाया गया, जबकि सचिन पायलट अपने घाव सहलाते रह गए।

अब वही दृश्य केरल कांग्रेस में दोहराया जा रहा है।

राहुल गांधी ने सचिन से वादा किया था कि अगर पार्टी जीतती है तो उन्हें मुख्यमंत्री बनाएंगे, लेकिन वे अपने वादे को पूरा नहीं कर पाए।

केरल कांग्रेस नेतृत्व अभी भी असमंजस में है, क्योंकि पार्टी हाई कमान भारी जीत के बावजूद, मुख्यमंत्री का चयन नहीं कर पा रही है।

साढ़े चार घंटे की वह मीटिंग निर्णय हीन रही, जिसमें राहुल गांधी ने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवारों और पर्यवेक्षकों के साथ व्यक्तिगत बैठकें कीं।

जहाँ केसी वेणुगोपाल के पास हेडकाउंट में अधिकांश विधायक हैं,

(शेष पृष्ठ 5 पर)

एसएमएस मैडिकल कॉलेज के छात्र ने आत्महत्या की

जयपुर, 9 मई। एसएमएस थाना इलाके में सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल की आठवीं मंजिल पर सीढ़ियों की रैलिंग पर एक एमबीबीएस फाइनल ईयर के छात्र ने फंदे से लटकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। शनिवार सुबह छात्र को फंदे से लटका देख हॉस्टल परिसर में सनसनी फैल गई। सूचना पर मौके पर

- न्यू आरडी हॉस्टल की आठवीं मंज़िल पर सीढ़ियों की रैलिंग से लटका हुआ उसका शव मिला।

पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतार पोस्टमार्टम के लिए सवाई मानसिंह अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया।

थानाधिकारी राजेश शर्मा ने बताया कि नितिन यादव (22) पुत्र अर्जुन सिंह अलवर निवासी 20 दुकान नायला हाउस के पास अपने कुछ दोस्तों के साथ किराए के फ्लैट पर रहता था। शनिवार को नितिन का फोरेंसिक मेडिसिन का पेपर था। नितिन अपने दोस्तों के साथ एसके मेनन हॉस्टल में पढ़ने गया था। रात करीब 2 बजे वो अपने फ्लैट पर जाने की बात कह कर वहां से निकल गया और करीब पौने तीन बजे वो न्यू आर डी हॉस्टल पहुंचा। वहां पर सुबह

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भाजपा बनी ''बंगालार जातीय पार्टी'', शपथ ग्रहण समारोह में

श्यामा प्रसाद मुखर्जी व उनके कश्मीर यात्रा के साथी 97 वर्षीय माखन लाल सरकार का प्र.मंत्री ने शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया व श्रद्धा से चरण स्पर्श किए

- माखन लाल सरकार का पूरा किस्सा मंच से सुनाया गया कि कैसे उन्हें दिल्ली पुलिस ने गिरफ्तार किया था तथा कोर्ट ने उनकी गिरफ्तारी की वजह जानी चाही तो बताया गया, उन्होंने एक देश भक्तिपूर्ण गाना गाया था जो नापसंद किया गया था। अतः उन्हें गिरफ्तार किया गया था। जज ने सरकार को दोबारा गाना सुनाने के आदेश दिए तथा गाना सुनकर उन्हें हिरासत से छोड़ने के आदेश दिए और निर्देश दिए दिल्ली पुलिस व सरकार को कि उन्हें उनके घर सिलिगुड़ी भेजने की व्यवस्था करे और रास्ते के लिए जेब खर्च भी दे।
- शपथ ग्रहण समारोह एक ''डिटेल्ड'' प्रयास हो गया, भाजपा का ''बंगालियाना'' स्वरूप दिखाने का, शायद भाजपा ममता बनर्जी के भाजपा को ''बंगाली विरोधी'' होने के लांछन को पूर्ण रूप से झुठलाना चाहती थी।
- शपथ ग्रहण समारोह की तारीख भी सोच समझकर रविन्द्र नाथ टैगोर के जन्म दिन पर रखी गई थी।

-अंजन रॉय ----
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। शुभेन्दु अधिकारी द्वारा बंगाल के पहले भाजपा मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के साथ, राज्य में एक नया अध्याय शुरू हो गया है। इसके साथ ही अड़ियल और चीखने चिल्लाने वाली ममता बनर्जी राजनीतिक गुमनामी के अंधकार में चली जाएंगी।

ब्रिगेड परेड ग्राउंड पर आयोजित अपने विशाल शपथ ग्रहण समारोह में, भाजपा ने अपनी शुरुआत की यादें ताज़ा कीं और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की याद दिलाई, जिन्होंने वर्तमान भाजपा के पूर्ववर्ती संगठन जनसंघ की स्थापना की थी।

एक पल के लिए शपथ ग्रहण समारोह अतीत की यात्रा जैसा हो गया, जिसमें पार्टी की स्थापना के शुरुआती दौर को याद किया गया। हालांकि, डॉ. मुखर्जी ने अपने शुरुआती महत्वपूर्ण प्रयास बंगाल में शुरु किए थे, लेकिन भाजपा को बंगाल में सत्ता में आने में पचहत्तर साल लग गए।

97 वर्षीय माखन लाल सरकार आज़ादी के तुरंत बाद जवाहरलाल नेहरू की सरकार द्वारा कश्मीर को विशेष दर्जा देने का विरोध करने के लिए

(शेष पृष्ठ 5 पर)

वीसीके और वामदलों द्वारा विजय को समर्थन देने का स्वागत किया स्टालिन ने

स्टालिन ने कहा, तमिलनाडु में स्थिर सरकार के लिए यह जरुरी है, ये दल विजय को समर्थन देने के बाद भी द्रमुक के साथ बने रहेंगे

- स्टालिन ने लेकिन कांग्रेस के व्यवहार की आलोचना की और कहा कि उन्होंने विजय को समर्थन घोषित करने से पहले चर्चा तक नहीं की, उन्होंने पीठ में छुरा भोंका है।
- वीसीके विधायक दल के नेता वन्नी आरसू द्वारा हस्ताक्षरित पत्र में कहा गया है कि हमारे अध्यक्ष डॉ. थोल थिरुमावलान राज्य में स्थिर सरकार बनाने के लिए टीवीके पार्टी को बिना शर्त समर्थन देने की घोषणा करते हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। टीवीके मुख्यालय में अब ''जश्न'' का समय है। सुपरस्टार विजय का चुनावी नंबरों का डर खत्म हो गया है। अभिनेता, जिन्होंने इस सप्ताह की शुरुआत में एक बड़ी चुनावी सुपरहिट देने के बाद आधा रास्ता तय करने में संघर्ष किया था, ने अंततः बहुमत हासिल कर लिया है। इससे तमिलनाडु में पहली गठबंधन सरकार बनने और विजय के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने का रास्ता साफ हो गया है।

विदुतलाई चिरुथाइगल कचि (वीसीके) और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल), दोनों के पास दो-दो विधायक हैं, अब तमिलगा वेत्री कज़ा (टीवीके) को बिना शर्त समर्थन दे चुके हैं। उनके समर्थन से, टीवीके के नेतृत्व वाले गठबंधन की विधायक संख्या अब 120 तक पहुँच गई है, जो 118 के बहुमत के आँकड़े से अधिक है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल कोलकाता में शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए

कोलकाता/जयपुर, 9 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शनिवार को कोलकाता में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में आयोजित इस समारोह में उन्होंने शुभेन्दु अधिकारी को मुख्यमंत्री एवं अन्य विधायकों को मंत्री पद की शपथ लेने पर हार्दिक बधाई एवं

- उन्होंने शुभेन्दु अधिकारी को मुख्यमंत्री पद की बधाई दी।

शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन की सरकार पश्चिम बंगाल के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्पित होकर कार्य करेगी।

इस दौरान केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सदस्यों

(शेष पृष्ठ 5 पर)

तमिलनाडु के संदर्भ में प्रमोद महाजन का पुराना भाषण वायरल

महाजन ने यह भाषण 1997 में एचडी देवेगौड़ा सरकार के अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान दिया था

- भाषण में उन्होंने गठबंधन राजनीति के विरोधाभासों का उल्लेख किया और चीन यात्रा के दौरान चीनी प्रतिनिधिमंडल से चर्चा के दौरान अपनी बात का हवाला दिया, जब उन्होंने कहा था, ''मैं प्रमोद महाजन हूँ, मैं लोकसभा सदस्य हूँ, मैं सदन की सबसे बड़ी पार्टी से हूँ, पर विपक्ष में हूँ।''
- महाजन ने अपने भाषण में कहा, चीन के प्रतिनिधियों ने इस पर हैरानी जताई। महाजन ने चीन में यह भी बताया कि कांग्रेस दूसरी सबसे बड़ी पार्टी है, सरकार को बाहर से समर्थन दे रही है, माकपा दूसरा सबसे बड़ी पार्टी है, सत्तारूढ़ गठबंधन में शामिल है, पर सरकार में शामिल नहीं है और सबसे छोटी पार्टी ने सरकार बनाई है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। लगभग तीन दशकों पहले दिया गया एक भाषण इस समय फिर से चर्चा में है, जब तमिलनाडु एक त्रिशंकु विधानसभा के परिणामों से निपट रहा है। हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में सीटों के आधार पर सबसे बडी पार्टी, विजय की टीवीके, को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया है और यह अब एक या दो सीट वाले छोटे दलों से समर्थन मांग रही है, तब केन्द्र में सबसे बड़ी पार्टी विपक्ष में थी और तीसरी सबसे बड़ी पार्टी गठबंधन का हिस्सा थी, जबकि सबसे छोटी पार्टी ने गठबंधन सरकार बनाई थी।

इस पृष्ठभूमि में, पर्यवेक्षक 1997 में भाजपा के पूर्व नेता प्रमोद महाजन के उस भाषण को याद कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने गठबंधन राजनीति की विरोधाभासों पर लोकसभा में विश्वास मत प्रस्ताव के दौरान टिप्पणी की थी।

यह भाषण 11 अप्रैल 1997 को प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा की यूनाइटेड फ्रंट सरकार के विश्वास प्रस्ताव पर हो रही चर्चा के दौरान दिया गया था। इसे न केवल उसकी तीखी टिप्पणियों, बल्कि हास्यपूर्ण अंदाज के लिए भी याद किया जाता है। तमिलनाडु में राजनीतिक दलों द्वारा विचारधाराओं की सीमाओं को पार करते हुए बातचीत करने के दौरान महाजन का यह भाषण फिर से वायरल हो रहा है, जिसमें द्रमुक और अन्नाद्रमुक के अल्पकालिक सहयोग की चर्चा भी शामिल है।

1996 के लोकसभा चुनावों में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। भाजपा 161 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाने का निमंत्रण दिया। शिवसेना सहित, अपने तत्कालीन सहयोगियों के साथ भाजपा लगभग 194 सीटों पर भरोसा कर सकती थी। वाजपेयी को टीडीपी, डीएमके या एजीपी जैसे क्षेत्रीय दलों से अतिरिक्त समर्थन की उम्मीद थी। लेकिन इन दलों ने धर्मनिरपेक्षता का हवाला देते हुए, भाजपा के खिलाफ एकजुटता बनाए रखने के लिए समर्थन देने से इनकार कर दिया।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प.बंगाल में भाजपा के पहले मु.मंत्री बने शुभेन्दु

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। शुभेन्दु अधिकारी, जिन्होंने आज पश्चिम बंगाल के पहले भाजपा मुख्यमंत्री के रूप में

- शुभेन्दु अधिकारी के साथ 5 अन्य मंत्रियों ने भी शपथ ली। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी सहित भाजपा के सभी बड़े नेता व अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी मौजूद रहे।

शपथ ली, ने राज्य मंत्रिपरिषद में पांच मंत्रियों को शामिल किया है। अधिकारी की कैबिनेट में शामिल विधायकों में हैं: दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, निसिथ प्रमाणिक, क्षुदिराम टुडु और अशोक

(शेष पृष्ठ 5 पर)

यूक्रेन युद्ध का मकसद था शायद रूस का पुराना रूतबा पुनः स्थापित करना

पर, अब कुछ उल्टा ही हो रहा है, इस युद्ध ने रूस की ''फाल्ट लाइन्स'' और उजागर कर दी!

- रूस को एक हानि यह भी हुई कि यूरोप को, रूस द्वारा जो पैट्रोल व गैस उपलब्ध कराई जा रही थी उस गैस व पेट्रोल पर यूरोप की निर्भरता कम होती जा रही है।
- मामला अब केवल रूस व यूरोप के बीच का मुद्दा नहीं रह गया है। बल्कि,रूस की जनता भी काफी थक सी गई है तथा कुछ निराश भी, क्योंकि यह समझ नहीं आ रहा नागरिकों को कि यह स्थिति कभी ठीक होगी या नहीं, या जनता अपनी ''बैल्ट ही टाइट'' करती रहे।
- कल को आशा कि दृष्टि से नहीं देख पाना, कोई शुभ संकेत नहीं हैं।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। सालों तक, व्लादिमीर पुतिन ने खुद को उस अनिवार्य मजबूत नेता के रूप में पेश किया, जिसने रूसी पावर, स्थिरता और राष्ट्रीय गौरव को बहाल किया। लेकिन अधिनायकवादी नियंत्रण की परतों के नीचे, ऐसे संकेत उभर रहे हैं कि जिस प्रणाली को उन्होंने बनाया, वह थकावट के दौर में प्रवेश कर रही है। अब रूस का राजनीतिक और कारोबारी अभिजात वर्ग युद्ध या देश की दिशा को सामूहिक राष्ट्रीय परियोजना के रूप में नहीं देखता। जिस युद्ध को कभी ''हमारा'' कहा जाता था, उसे अब गुपचुप रुप से ''उनका'' युद्ध कहा जाने लगा है।

भाषा में यह सूक्ष्म बदलाव एक गहरी सच्चाई को दर्शाता है: रूस की व्यवस्था के कई लोग अब पुतिन को भविष्य का शिल्पकार नहीं, बल्कि एक ऐसे तंत्र का संरक्षक मानते हैं, जो गिरावट के जाल में फंसा है। खुले विद्रोह का कोई संकेत नहीं है। डर, दमन और राज्य नियंत्रण अभी भी मजबूत हैं। फिर भी, रूस के भविष्य को आकार देने में क्रेमलिन का एकाधिकार कमजोर पड़ता दिखाई दे रहा है।

विडम्बना यह है कि पुतिन ने आंशिक रूप से अपनी सत्ता बनाए रखने और रूस की भू-राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए यूक्रेन युद्ध शुरू किया। इसके बजाय, यह संघर्ष रूसी प्रणाली की संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर कर गया और इसके दीर्घकालिक दिशा पर सवाल उठाए।

पहला कारक युद्ध की बढ़ती आर्थिक और सामाजिक लागत है। क्रेमलिन ने शुरू में यूक्रेन संघर्ष को सीमित सैन्य अभियान के रूप में पेश किया, जो सामान्य रूसी जीवन को प्रभावित नहीं करेगा। यह भ्रम टूट चुका है। महंगाई बढ़ गई, टैक्स बढ़ा दिए गए, बुनियादी ढांचे पर खर्च कम हुआ और सेंसरशिप बढ़ी। रूसी लोग सामूहिक रूप से इसका बोझ उठाते रहे, लेकिन राज्य ने इसके बदले राष्ट्रीय उद्देश्य या भविष्य में कोई पुरस्कार प्रदान नहीं किया।

दूसरा, रूस का अभिजात वर्ग भी असहज हो रहा है। दशकों तक, अमीर रूसी अपने धन की सुरक्षा पश्चिमी बैंकों, न्यायालयों और ऑफशोर संरचनाओं के माध्यम से करते थे। लेकिन पश्चिमी प्रतिबंधों और भू-राजनीतिक अलगाव के कारण उस धन को रूस में वापस लाना पड़ा, जहां संस्थाएं कमजोर हैं और राज्य हस्तक्षेप अक्सर मनमाना होता है। पिछले कुछ वर्षों में, निजी संपत्तियों के अरबों डॉलर कथित रूप से जब्त, राष्ट्रीयकृत या शासन के निष्ठावानों को पुनर्वितरित किए गए। पुतिन के प्रति वफादार लोग भी अब ऐसे नियम चाहते हैं, जिनके बारे में वो दावे से कह सकें और वे कानूनी सुरक्षा चाहते हैं।

तीसरा, भू-राजनीतिक परिदृश्य ऐसे तरीके से बदल गया है, जो रूस को नुकसान पहुंचाता है। पुतिन ने पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देने और वैश्विक व्यवस्था को नया आकार देने की आशा की थी। इसके बजाय, रूस अधिक अलग-थलग और रणनीतिक रूप से कमजोर हो गया है। यूरोप ने रूसी ऊर्जा पर निर्भरता कम कर दी, जिससे मॉस्को का प्रमुख आय स्रोत कमज़ोर हुआ। रूस की कूटनीतिक स्थिति भी कमज़ोर हुई है, क्योंकि वैश्विक संस्थाएं खुद प्रभावहीन होती जा रही हैं। पश्चिम को कमज़ोर करने के प्रयास में, क्रेमलिन ने उन संरचनाओं को भी कमजोर कर दिया, जो कभी रूस को अंतरराष्ट्रीय महत्व देती थीं।

साथ ही, रूस एक पहचान संकट का भी सामना कर रहा है। ऐतिहासिक रूप से, रूस ने स्वयं को यूरोप और

(शेष पृष्ठ 5 पर)

मंगलवार को शपथ लेंगे, असम के नए मु.मंत्री

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 9 मई। असम के कार्यवाहक मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने शुक्रवार को कहा कि नई असम सरकार का शपथ ग्रहण समारोह 12 मई को सुबह 11 बजे होगा।

खानापारा वेटरिनरी फील्ड का

- असम के कार्यवाहक मु.मंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने यह जानकारी दी और बताया कि मंगलवार सुबह 11 बजे शपथ ग्रहण समारोह होगा।

निरीक्षण करते समय मीडिया से बात करते हुए सरमा ने कहा कि 10 मई को भाजपा विधायक दल की बैठक होगी, जिसमें असम का नेता चुना जाएगा।

उन्होंने आगे कहा कि उसी दिन सुबह 11 बजे एनडीए की संयुक्त

(शेष पृष्ठ 5 पर)